ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 265-267

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

विकास खण्ड पवई (जनपद आजमगढ़) की भौगोलिक पृष्ठभूमि

ममता सिंह

असिस्टेण्ट प्रोफेसर– भूगोल विभाग, पार्वती महिला महाविद्यालय, कलान, सुल्तानपुर (उ0प्र0), भारत

Received- 08.08.2020, Revised- 12.08.2020, Accepted - 15.08.2020 E-mail: - satyam842@gmail.com

सारांश : *किसी भी भू–इकाई की सभ्यता एवं संस्कृति का विकास वहॉ की भौगोलिक दशाओं पर आधारित होता है। बिशर स्टीफेन (1932) ने स्वीकार किया कि "भू–पर्यावरण मानवीय प्रतिक्रियाओं के लिए एक कर्मभूमि की रचना करता है।" वैसे भौतिक परिवेश का मानवीय प्रतिक्रियाओं के विवरणों और स्वभावों पर किये गये प्रभावों का अध्ययन भूगोल में एक विशिष्ट स्थान रखता है। भौतिक पृष्ठभूमि के प्रमुख तत्व जैसे– उच्चावच, प्रवाह प्रणाली, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति, मिट्टी खनिज सम्पदा, जैव समुदाय, भौमजल, आदि भौगोलिक दशाओं के सृजन में सहायक होते है। प्रस्तुत अध्ययन में समस्त कारकों का होना अनिवार्य होता है। अध्ययन क्षेत्र का पूर्ण स्थिति एवं विस्तार का ज्ञान अति आवश्यक होता है।*

कुंजीभूत शब्द– भू–इकाई, सभ्यता, संस्कृति, विकास, भौगोलिक, दशाओं, आधारित, भू–पर्यावरण, मानवीय।

1. स्थिति एवं विस्तारः– भारत विकास खण्ड 'पवई' मध्य गंगा मैदान में पूर्वी उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जनपद की फूलपुर तहसील का एक विकासोन्मुख विकास खण्ड है। यह फूलपुर तहसील के उत्तर पश्चिम भाग में तहसील मुख्यालय से 26किमी0 की दूरी पर स्थित है।

'पवई' का भौगोलिक विस्तार 25 48 उत्तरी अक्षांश से 26 16 उत्तरी अक्षांश तथा 82 40 पूर्वी देशान्तर से 83 65 पूर्वी देशान्तर तक है। 'पवई' का उत्तर दक्षिण विस्तार 26 तथा पूर्वी–पश्चिम 16 किमी0 है तथा कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 211.77 वर्ग किमी है। जिसके अन्तर्गत सन् 2001 की जनगणना के अनुसार यहॉ की कुल जनसंख्या 178453 है, जिसमें पुरूषों की संख्या 91613 तथा स्त्री की संख्या 86840 है।

2. उच्चावयः– भारत विकास खण्ड 'पवई' स्पष्टतया अदृश्य न्यून ढाल वाला मटियार दोमट मिट्टी से निर्मित गंगा एवं सहायक नदियों द्वारा निक्षेपित समतल मैदान है। अध्ययन क्षेत्र पूर्ण रूप से दोमट मिट्टी एवं बलुई दोमट तथा जलोढ़ जमाव द्वारा बना हुआ है। क्षेत्र के उत्तर–पश्चिम में मझुई नदी पश्चिम उत्तर दिशा में प्रवाहित होती है। तथा मझुई में अन्य सहायक नदियॉ अपना

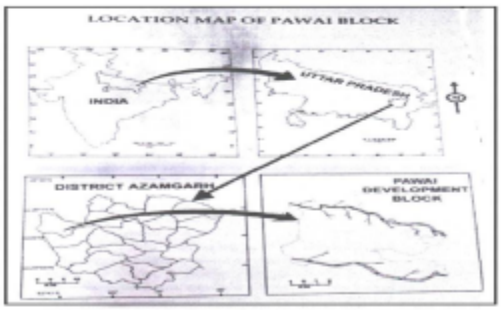

जल समर्पित करती है। सम्पूर्ण भू–भाग की समुद्र तल से ऊॅचाई 75मी0 है। अध्ययन क्षेत्र मध्य गंगा मैदान का अभिन्न अंग है। क्षेत्र की प्रमुख अपवाह तंत्र मझुई नदी है और अन्य कुॅवर नदी अपवाह तंत्र के रूप में है। सरिताओं का ढाल उत्तर पश्चिम में पूरब की तरफ है। कुछ नदियॉ उत्तर से दक्षिण–पश्चिम दिशा की ओर प्रवाहित होती है। क्षेत्र मटियार दोमट तथा बलुई दोमट जमाव द्वारा निर्मित है। सबसे ऊपर बलुई दोमट, इसके बाद चिकनी मिट्टी, बंजरी, कंकड तथा बालू की तहें पायी जाती है, एवं इसकी आधारीय शैल ग्रेनाइट है।

3. अपवाह तंत्रः– भारत क्षेत्र की उत्तरी सीमा से प्रवाहित होने वाली मझुई नदी जो कि अध्ययन क्षेत्र को सबसे अधिक प्रभावित करती है। मझुई नदी क्षेत्र से होते हुए दुर्वासा में कुॅवर नदी से मिल जाती है। दुर्वासा में ये दोनो नदियॉ टोंस नदी में मिलती है तथा टोंस नदी आगे चलकर तमसा नदी में मिलती है तमसा नदी सरयू नदी (आदि गंगा) में तथा सरयू नदी आगे चलकर गंगा में मिल जाती है। नदियों के द्वारा छोटे–छोटे बीहड़ों का निर्माण होता है, जिसके कारण क्षरण होता है।

4. भौतिक विभागः– अध्ययन क्षेत्र मध्य गंगा मैदान का एक लघु क्षेत्र है। जो गंगा एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा लाये गये जलोढ एवं मटियार दोमट से बना हुआ है। नदी तटीय क्षेत्रों मे अपरदन की क्रिया के कारण असमान धरातल पाया जाता है। नदियॉ अपने अपदनात्मक किया के द्वारा बीहड़ क्षेत्रों का निर्माण करती है तथा मृदा को काट–छॉटकर ढीला कर दी है। अध्ययन क्षेत्र को मुख्यतः तीन भागों में बॉटा गया है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

1. मझुई खादर क्षे0
2. मध्यवर्ती क्षेत्र
3. कुँवर नदी बाढ़ प्रभावित क्षेत्र

5. जलवायु:– जैविक जलवायु को प्रभावित करने वाले कारकों में जलवायु का मुख्य स्थान होता है। जलवायुवीय विषमता द्वारा क्षेत्रीय विभिन्नताओं का बीजारोपण होता है। जैसा कि देसाई (1968) ने स्वीकार किया है कि ''जलवायु का प्रभाव किसी देश के निवासियों के रहन–सहन, व्यवसाय, खाद्योत्पादन आदि पर पड़ना स्वाभाविक होता है'' इस प्रकार भौतिक कारकों में जलवायु का स्थान सर्वोपरि है। भारत की जलवायु को केवल एक शब्द से अभिव्यक्त किया जा सकता है और वह है 'मानसून'। मध्य गंगा के मैदान में स्थित आजमगढ़ जनपद मानसूनी जलवायु के अन्तर्गत आता है। कोपेन के जलवायु विभाजन के आधार पर शुष्क शीत ऋतु वाला मानसून प्रकार की पेटी है। थार्नश्वेट के जलवायु विभाजन के आधार पर प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र उर्ष्णाद्र कटि बन्धीय ताप पेटी में स्थित है। जो शुष्कतर पश्चिम उत्तर–पूर्व एवं आर्दता पश्चिम बंगाल के बीच एक सक्रमण जलवायु का क्षेत्र है। दूसरी ओर इसके उत्तर में तराई मैदान की उमस भरी जलवायु एवं दक्षिण में शुष्कार्द पठारी जलवायु पायी जाती है। विकास खण्ड पवई पूर्वी उत्तर प्रदेश की जलवायुविक विशेषताएँ रखता है, यहाँ पर सामान्य जलवायु सम शीतोष्ण है। मौसम विज्ञानिकों ने जलवायु का निम्न प्रमुख ऋतुओं में विभक्त किया है–

1. शीत ऋतु (मध्य अक्टूर से फरवरी)
2. ग्रीष्म ऋतु (मार्च से मध्य जून तक)
3. शीत ऋतु (मध्य जून से मध्य सितम्बर)
4. मानसून के निवर्तन अथवा प्रत्यार्वतन की ऋतु (मध्य सितम्बर से मध्य अक्टूबर तथा जनवरी से फरवरी)

6. तापमान:– किसी स्थान विशेषा के जलवायु निर्धारण में तापमान की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अध्ययन क्षेत्र का उच्च औसत वार्षिक तापमान 35.2 है। सामान्यतया ग्रीष्म कालीन महीनो का तापमान उच्च रहता है। मई–जून महने में सर्वाधिक गर्मी पड़ती है तथा तेज हवाएँ चलती है, जिसे स्थानीय भाषा में लू कहते है। मई महीने मे औसत उच्च तापमान 42.5 ६ तथा औसतम न्यूनतम तापमान 27.9 होता है।

7. वर्षा:– जलवायुविक तत्वों में वर्षा का स्थान प्रमुख है। धारातलीय सतह पर विभिन्न उपयोगों में प्रयुक्त स्रोत वर्षा ही है। मध्य जून से सितम्बर तक वर्षाकालीन ऋतु होती है। जिसमें वर्ष की कुल वर्षा लगभग 973मिलीमीटर का 92 प्रतिशत इन्ही महीनों मे हो जाती है तथा इन्ही महीनों में तापमान भी ऊँचा रहता है। कभी–कभी यह मानसूनी वर्षा समय से नहीं हो पाती या अनियमित होती है, जिसके कारण आवश्यक जलापूर्ति सिंचाई के विभिन्न साधनों के द्वारा प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। इस क्षेत्र की अधिकतम औसत मासिक वर्षा जुलाई में 294. 9 मि0मी0 तथा अगस्त में 286.5मि0मी0 अंकित की गई है। अध्ययन क्षेत्र में सबसे कम औसत वर्षा नवम्बर और दिसम्बर माह मं क्रमशः 6.1मि0मी0 तथा 5.1मि0मी0 दर्ज की गई है।

विकास खण्ड पवई का औसत मासिक उच्चतम एवं न्यूनतम तापमान:-

माह	उच्चतम तापमान (डिग्री सेल्सियस में)	न्यूनतम तापमान (डिग्री सेल्सियस में)	औसत वार्षिक तापमान (डिग्री सेल्सियस में)
जनवरी	24.10	10.20	17.15
फरवरी	26.20	11.2	18.7
मार्च	32.9	17.4	25.15
अप्रैल	38.9	22.7	30.8
मई	42.5	27.9	35.2
जून	39.7	28.1	33.9
जुलाई	34.3	26.1	29.7
अगस्त	33.8	26.2	30.0
सितम्बर	33.8	24.1	28.9
अक्टूबर	32.7	19.5	26.1
नवम्बर	30.8	14.3	22.5
दिसम्बर	25.9	9.5	17.6

स्रोत–मौसम विज्ञान केन्द्र अमौसी, लखनऊ

8. मृदा:– ''मृदा संसाधन कृषि आधारित जनसंख्या की रीढ़ के रूप में होती है एवं कृषि प्रधान क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व तथा मृदा उपजाऊ में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है'' (B.P. Singh, 1979) किसी भी प्रदेश की प्रदेश की मिट्टियों के उत्पत्ति एवं विकास में भौतिक, रासाय– निक एवं जैविक प्रक्रमों का योगदान होता है।

विकास खण्ड पवई में वर्षा का विवरण:-

माह	कुल वर्षा मिलीमीटर में
जनवरी	13.20
फरवरी	17.50
मार्च	6.10
अप्रैल	4.80
मई	9.70
जून	88.70
जुलाई	294.90
अगस्त	286.50
सितम्बर	197.10
अक्टूबर	43.40
नवम्बर	6.10
दिसम्बर	5.10
वार्षिक	973.10

स्रोत–मौसम विभाग, उत्तर प्रदेश की जलवायु 2002

(Homes, 1978) मिट्टी धरातल की वह ऊपरी सतहर है, जो प्रधानतः जैविक क्रिया– कलापो की जीवन प्रदान करती है। प्राकृतिक संसाधनों में मिट्टी एक आधारभूत संसाधन है। जिस पर बनस्पति, पशु एवं मानव सभी का अस्तित्व निर्भर करता है। अध्ययन क्षेत्र की लगभग 80

PIF/4.005 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

प्रतिशत जनसंख्या गॉवों में निवास करती है। जो मुख्यतः कृषि पर आधारित है। कृषि कार्य काफी हद तक मिट्टी की संरचना एवं उसकी उर्वरता पर निर्भर करता है। (राय चौधरी, 1963) विकास खण्ड में कॉप एवं जलोढ मिट्टी पायी जाती है, जिसका निर्माण गंगा एवं इसकी सहायक नदियॉ द्वारा लाये गये भवरो के निक्षेप से हुआ है।

9. परिवहन एवं संचारः– परिवहन वह व्यवस्था है जिसमें यन्त्रों तथा संवहनों द्वारा मनुष्य और माल भार को एक स्थान पर पहुॅचाया जाता है। इससे कृषि तथा उद्योग के विकास करने में सहायता मिलती है। व्यापार परिवहन की सुविधा और संचार साधनों पर आश्रित रहता है। परिवहन तंत्र समय एवं मूल्यों को कम करता है, साथ ही कृषि से सम्बन्धित रोजगार के अवसरों में वृद्धि करता है एवं उपभोक्ताओं को प्राप्त होने वाली वस्तुओं को उपलब्ध कराता है। (रॉन डिनेली एवपं रूडले 1976) यातायात एवं संचार माध्यम का मुख्य–कार्य उत्पादन कार्य में संलग्न जनसंख्या एवं उपभोक्ता के बीच की दूरी एवं समय की खाई को पाटना है।

10.निष्कर्षः– किसी भी क्षेत्र के भौगोलिक विकास के लिए समस्त कारकों का होना अनिवार्य होता है, क्यूकि "भू–पर्यावरण मानवीय प्रतिकियाओं के लिए एक कर्मभूमि की रचना करता है।" भौतिक पृष्ठभूमि के प्रमुख तत्व जैसे– उच्चावच, सम्पदा, जैव समुदाय, भौमजल, आदि भौगोलिक दशाओं के सृजन में सहायक होते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Holmes, L. Darisand- Holmes Principles of Physical geology Arther 1978.
2. Singh Minati- Lower Ganga Ghaghara Doab: A study in Population and settlementt Sahitya Bhawan Agra, 1977 P.81.
3. Singh R.L- Evolutin of settlements in Middle Ganga Vol-ley N.G.J.I. Pt.II 1955 P.32.
4. Ahlamann H.W.- The Geographical study of Geographical Review Vol. 8, 1979 P.3.

*****